Role of Education in conversation and enchantment of Human values : A study

मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्द्धन में शिक्षा की भूमिकाः एक अध्ययन।

डॉ0 देवेन्द्र सिंह चम्याल

असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, सोबन सिंह जीना परिसर, अल्मोड़ा, सोबन सिंह जीना विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड)

ईमेल– deepu.chamyal666@gmail.com

साराँश– मूल्य वह है जो मानव इच्छा को पूरा करता है। जीवित रहने के लिए इच्छाएं पूरी करनी पड़ती हैं। हम अपने जीवन के कुछ लक्ष्य या उद्देश्य बनाएंगे जिनके लिए हम जीते हैं। **आलपोर्ट** के अनुसार– **"मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करने का कार्य करता है,"** तथा **जै0 आर0 फ्रैंकल** के अनुसार– **"मूल्य आचार, सौन्दर्य, कुशलता या महत्व के वे मानदण्ड हैं जिनका लोग समर्थन करते हैं जिनके साथ वे जीते हैं तथा जिन्हें वे कायम रखते हैं।"** मूल्य की अवधारणा मनुष्य के प्रत्येक चुनाव, निश्चय, निर्णय तथा कार्य में विद्यमान है। जब हम दो वस्तुओं या दो मनोरथों में चुनाव करते हैं तो उस मनोरथ को प्राप्त करने का निश्चय करते हैं जो अधिक श्रेष्ठ है और इसी निर्णय के अनुसार जीवन में कार्य करते हैं। इस चुनाव, निर्णय तथा निश्चय में उन वस्तुओं या मनोरथों के मूल्य की अवधारण छिपी है। एक का मूल्य दूसरे से अधिक ठहराया गया है। यदि ऐसा मूल्यांकन न होता, तो निर्णय कभी नहीं हो सकता था। व्यक्ति एक वस्तु को पसन्द करता है, दूसरी को नापसन्द, एक व्यक्ति की प्रशंसा करता है, दूसरे की निन्दा करता है, एक कार्य को शुभ मानता है और दूसरे को अशुभ, एक विधि को ठीक और दूसरे को गलत, ये सारे निर्णय मूल्य की अवधारणा पर आधारित है। मूल्य ही मनुष्य के लिए आदर्श, उद्देश्य, लक्ष्य, गन्तव्य, मनोरथ एवं साध्य बनते हैं और वह जीवन को इनकी प्राप्ति के लिए लगा देता है। मूल्य जीवन को सार्थक बनाते हैं। मूल्य ही मनुष्य के मन में विश्वास, श्रद्धा, प्रेरणा, वफादारी, जिम्मेदारी, कर्तव्य भावना आदि उत्पन्न करते हैं। मूल्य ही मनुष्य के जीवन को अर्थ, आकर्षण, उच्चता तथा श्रेष्ठता प्रदान करते हैं।

मूल्य युग परिवर्तन के साथ–साथ बदलते रहते हैं। वर्तमान वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकी प्रधान युग में शिक्षा के प्रसार के बावजूद जीवन मूल्यों में ह्रास दिखाई दे रहा है। मूल्य आधारित जीवन शैली को ध्यान में रखते हुए यह जरूरी है कि प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा, उच्च शिक्षा एवं अन्य समस्त प्रकार की शिक्षा में मूल्यों के संरक्षण एवं संवर्द्धन हेतु विशिष्ट व संगठित प्रयत्न किये जायें।

मुख्य शब्द– मानवीय, मूल्यों, संरक्षण, संवर्द्धन एवं शिक्षा।

प्रस्तावना– हिन्दी का 'मूल्य' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'वैल्यू' (Value) शब्द का पर्याय है। अंग्रेजी भाषा के 'वैल्यू' की व्युत्पत्ति लैटिन भाषा के 'वैलियर' Valere शब्द से हुई है। जिसका अर्थ है, योग्यता, उपयोगिता व महत्व। व्यूत्पत्ति के आधार पर हम यह कह सकते हैं कि व्यक्ति या वस्तु का वह गुण जिसके कारण उसका उपयोग या महत्व जाना जाता है, मूल्य कहलाता है। मूल्य के विषय में विभिन्न विचारकों के विभिन्न मत हैं। सामान्यतः किसी समाज में जिन आदर्शों को महत्व दिया जाता है और जिनसे उस समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होता है, उन्हें उस समाज के मूल्य कहते हैं। परन्तु भिन्न–भिन्न अनुशासनों में इन्हें भिन्न–भिन्न रूप में

लिया गया है और अभी तक इनके विषय में कोई सर्वमान्य अवधारणा निश्चित नहीं हो सकी है। वेद मूलक दर्शनों के अनुसार मानव जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष है और चारवाक तथा आजीवक दर्शनों के अनुसार भौतिक सुख–भोग। भारतीय दार्शनिकों की दृष्टि से मोक्ष और भोग दो भिन्न मूल्य हैं। तभी तो मोक्ष में विश्वास रखने वालों का व्यवहार परमार्थ केन्द्रित होता है और भोग में विश्वास रखने वालों का स्वार्थ केन्द्रित। धर्मशास्त्र में नैतिक नियमों को मूल्य माना जाता है। प्रत्येक धर्म के कुछ नैतिक नियम होते हैं और मनुष्य को उनका पालन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में करना होता है। मानवशास्त्री मूल्यों को सांस्कृतिक लक्षणों के रूप में स्वीकार करते हैं। उनकी दृष्टि से संस्कृति और मूल्य अभिन्न होते हैं, कोई संस्कृति अपने मूल्यों से ही पहचानी जाती है। उदाहरण के लिए हिन्दू संस्कृति चार पुरूषार्थ (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) और पाँच महाव्रतों (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य) की संस्कृति है, सामानन्यतः इन्हीं के आधार पर हिन्दू समाज के व्यक्तियों का व्यवहार निर्देशित होता है अतः ये ही हिन्दू समाज के मूल्य हैं। समानता और भाईचारे की संस्कृति है, सामान्यतः इन्हीं के आधार पर मुसलमान जाति के व्यक्तियों का व्यवहार निदेंशित होता है अतः ये ही मुसलमान समाज के मूल्य हैं। **काने (Kane)** के अनुसार–'**मूल्य वे आदर्श, विश्वास या प्रतिमान हैं जिनको एक समाज या समाज के अधिकांश सदस्यों ने ग्रहण कर लिया है।**'

इस युग में मूल्यों पर सबसे अधिक चिन्तन मनोवैज्ञानिकों और समाजशास्त्रियों ने किया हैं मनोवैज्ञानिकों ने मूल्यों को मनुष्य की रूचियों, अभिवृत्तियों और पसन्दों के रूप में लिया है। **फ्रिंलक** के अनुसार हम जिन मापदण्डों को पसन्द करते हैं और महत्त्व देते हैं, और जिनके आधार पर हम अपना व्यवहार निश्चित करते हैं, वे ही हमारे लिए मूल्य होते हैं। उनके शब्दों में– **मूल्य मानक रूपी मानदण्ड हैं जिनके आधार पर मनुष्य अपने सामने उपस्थित क्रिया विकल्पों में से चयन करने में प्रभावित होते हैं। फ्रिंलक** के विचार के पक्ष में एक बड़ा सटीक उदाहरण प्रस्तुत है। एक बार एक जापनी स्कूली बच्चे से प्रश्न किया गया–शत्रु तुम्हारे राष्ट्रीय ध्वज और धर्म पताका दोनों पर एक साथ आक्रमण कर रहा है, तुम पहले किसकी रक्षा करोगे? उसका उत्तर था– पहले राष्ट्रीय ध्वज की। साफ जाहिर है कि उसके मानदण्ड पर राष्ट्र, धर्म से ऊपर था इसलिए उसने दो विकल्पों में से इस विकल्प को चुना। समाजशास्त्री मूल्यों का सम्बन्ध समाज के विश्वास, आदर्श, सिद्धान्त और सामाजिक मानदण्डों से जोड़ते हैं। उनकी दृष्टि से किसी समाज के विश्वास, आदर्श, सिद्धान्त और व्यवहार मानदण्ड ही समाज के मूल्य होते हैं। भारतीय समाजशास्त्री **डॉ0 राधाकमल मुकर्जी** के शब्दों में– मूल्य समाज द्वारा स्वीकृत उन इच्छाओं और लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किए जा सकते हैं जिन्हें अनुबन्धन, अधिगम या समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा आभ्यान्तरीकृत किया जाता है और जो आत्मनिष्ठ अधिमान, मान तथा आकांक्षाओं का रूप धारण कर लेते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है– **किसी समाज के वे विश्वास, आदर्श, सिद्धान्त, नैतिक नियम और व्यवहार मानदण्ड जिन्हें समाज के व्यक्ति महत्त्व देते हैं और जिनसे उनका व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होता है, उस समाज एवं उसके व्यक्तियों के मूल्य होते हैं।**

प्रोफेसर **अर्बन** ने अपनी पुस्तक **'फण्डामेण्टल ऑफ ऐथिक्स'** में लिखा है कि **'मूल्य वह है जो मानव इच्छा की तृप्ति करे, जो व्यक्ति तथा उसकी जाति के संरक्षण में सहायक हो।' अन्त में वे कहते है कि 'केवल वही परम रूप से और साध्य रूप से मूल्यवान है जो आत्माओं के विकास या आत्म साक्षात्कार की ओर ले जाये।'** इस परिभाषा में मानव की जैविक से लेकर आध्यात्मिक तक सभी आवश्यकताओं का समावेश हो जाता है, जिसके लिए वे जीवित रहते हैं तथा बड़े से बड़ा त्याग करते हैं। इस प्रकार मूल्य वह सत्य है जिसके लिए व्यक्ति जीता है और आवश्यकता पड़ने पर वह संघर्ष करने, दुःख सहने तथा मृत्यु को भी स्वीकार करने के लिए तत्पर रहता है। कई महापुरूष जैसे सुकरात, ईसा मसीह एवं गाँधीजी के नाम इसी सन्दर्भ में श्रद्धा से लिए जाते है, क्योंकि ये मूल्य के लिए ही जिए और मूल्य के लिए ही मृत्यु प्राप्त किया। वस्तुतः मूल्य परिवर्तनशील समाज की वह धुरी है जिसके कारण समाज का अस्तित्व है। क्योंकि उपयोगिता या कल्याणकारिता की भावना ही समाज को स्थिर रखती है। यह भी कहा जा सकता है कि मूल्य मनुष्य के अन्तरतम में जगती हुई वह शक्ति है जो उसे एक विशिष्ट प्रकार से कर्म करने के लिए प्रेरित करती है और उसके आचरण को शासित करती है। जीवन के मूल्यों को स्थूल रूप से दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है–परिवर्तनशील मूल्य तथा शाश्वत मूल्य। वैसे सामान्यतः देखें तो मूल्य कई प्रकार के होते है, जैसे– जैविक मूल्य, सामाजिक मूल्य एवं आध्यात्मिक मूल्य। मूल्यों में भी समय के साथ अन्तर आ रहा है। उदाहरण के लिए कलयुग के जीवन मूल्यों से हम प्राचीन मूल्यों सतयुग, त्रेता, द्वापर आदि की तुलना करें तो काफी अन्तर प्रतीत होगा। प्राचीन समय से देखें तो जो जीवन मूल्य सतयुग में थे, वे त्रेता में नहीं थे, जो त्रेता में थे वो द्वापर में नहीं थे तथा जो द्वापर में थे वे कलयुग में पूर्णतः समाप्त हो चुके हैं।

कलयुग में हमारे व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में तनाव के कारण दिन–प्रतिदिन घुटन बढ़ती जा रही है। परिवार में छोटे बड़ों का आदर नहीं करते हैं। पति–पत्नी के सम्बन्ध तनावपूर्ण है। भाई– भाई से प्रेम नहीं करता, सामाजिक जीवन में सहयोग समाप्त होता जा रहा है। सामाजिक नियम एवं व्यवस्थाओं का उल्लंघन करते हुए हम संकोच नहीं करते हैं। प्रदर्शन, घेराव, तोड़–फोड़ हिंसात्मक विद्रोह एवं आतंक हमारे जीवन में हर समय तनाव या भय पैदा करते रहते हैं। भ्रष्टाचार कालाबाजारी, रिश्वतखोरी, तस्करी, मिलावट, काला धन आदि से सम्बन्धित गतिविधियाँ हमें दिन–प्रतिदिन व्याकुल करती रहती हैं। मानव जाति का स्वर्णिम युग समाप्त होता जा रहा है। हम निरन्तर विनाश की ओर अग्रसर हो रहे हैं। सामाजिक जीवन अस्त–व्यस्त हो रहा है। गरीबों, असहायों का शोषण बढ़ रहा है, व्यक्ति स्वार्थी, अवसरवादी, भोगी, चाटुकार एवं कर्त्तव्य–विमुख हो रहा है। जीवन की शान्ति न जाने कहाँ भागे जा रही है। ये सभी बातें मूल्यों का ह्रास नही है तो और क्या है? वर्तमान समय में मूल्य इतने गिर गये हैं कि जीने का अर्थ ही बदल गया है। हर काम में स्वार्थ भरा पड़ा है। समाज में कल्याणकारी सामंजस्य की स्थिति कायम रखने के उद्देश्य से ही मूल्यों का उद्‌भव होता है। लेकिन मूलतः उन्ही शाश्वत मूल्यों का वर्तमान में संरक्षण होता है, जो सम्पूर्ण मानव समाज के आधार स्तम्भ हैं। आज के समाज में सर्वमान्य मूल्य समानता, अस्पृश्यता निवारण, धर्म–निरपेक्षता आदि के अन्तर्गत उन्हीं शाश्वत मूल्यों की रक्षा की जा रही है, जिसके अनुसार प्राणीमात्र को प्रभु की सन्तान के रूप में स्वीकार करते हुए किसी भी प्रकार का कष्ट देना उचित नहीं समझा जाता ।

दर्शनशास्त्र में मूल्य की अवधारणा अर्थशास्त्र के क्षेत्र से आयी है। अर्थशास्त्र में मूल्यों को दो अर्थों में प्रयोग किया जाता है। (1) विनिमय मूल्य (Exchange value) (2) उपयोगिता मूल्य (Utility value)।

एक वस्तु का मूल्य, दूसरी वस्तु की तुलना में कितना है, इसका अनुमान मुद्रा के आधार पर लगाया जाता है। यह वस्तुओं का मूल्य ठहराता है। दूसरा मूल्य वस्तु की वह क्षमता है जिसमें वह मनुष्य की इच्छा या आवश्यकता को पूरा करता है, जैसे गेहूँ के आटे का मूल्य यह है कि यह खाया जाता है और मनुष्य की भूख को मिटाता है। यदि यह कहा जाए कि एक किलोगाम आटे का मूल्य दो रूपए है तो वह विनिमय मूल्य है क्योंकि इन दो रूपयों से कोई अन्य वस्तु भी खरीदी जा सकती है जिसका मूल्य दो रूपए हो। अब विनिमय में मूल्य का विचार केवल अर्थशास्त्र तक ही सीमित रह गया है, परन्तु उपयोगिता मूल्य का विचार दर्शनशास्त्र के क्षेत्र में आता है। समय व काल की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए दार्शनिकों व अन्य विद्वानों ने विविध प्रकार के मूल्यों को निश्चित किया है तथा उन्हें निम्न प्रकार से वर्गीकृत करने का प्रयत्न किया है–

(1) अमेरीकी शैक्षिक नीति आयोग– सन् 1951 के अमेरीकी शैक्षिक नीति आयोग ने पब्लिक स्कूलों के लिए निम्नलिखित मूल्य निर्धारित किये थे–

(i) मानव व्यक्तित्व के प्रति आदर,

(i) व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी,

(iii) संस्थाओं का व्यक्ति के अधीन होना,

(iv) सामान्य सहमति,

(v) सत्यनिष्ठा,

(vi) समानता,

(vii) भ्रातृत्व,

(viii) आनन्द की खोज,

(ix) आध्यात्मिक संवर्धन,

(x) श्रेष्ठता के लिए आदर।

(2) हजरत मौहम्मद के अनुसार मोहम्मद साहब ने मानव जाति के लिए शांति, विनम्रता, दया, स्नेह, क्षमा, उदारता, सादगी, मेहमानदारी, त्याग, विनय, शालीनता, न्याय, दृढ़ता, साहस, वीरता, परिहास आदि मूल्यों के शिक्षण की जरूरत अनुभव की थी। (माजिद अली खान, 1986)

(3) श्री सत्य सांई बाबा– श्री सत्य सांई बाबा ने पाँच प्रमुख मूल्यों पर बल दिया है–सत्य, धर्म, शान्ति, प्रेम तथा अहिंसा। इनके अन्दर समाहित अन्य मूल्य ये हैं–मानव सेवा, सहयोग, स्वच्छता, प्रार्थना, सादा जीवन व उच्च विचार आदि।

(4) रामकृष्ण मिशन की शाखायें– भी पूरे देश में मूल्यों की शिक्षा देने के कार्यक्रमों को चलाने में रूचि लेती हैं। वे श्री विवेकानन्द के विचारों से प्रभावित हैं तथा समाज–सेवा, सार्वभौमिक भाईचारा, तार्किक नैतिक संहिता तथा मानव–व्यक्तित्व के विकास पर बल देती हैं।

(5) चिन्मयानन्द मिशन– सत्य, सही आचरण, शान्ति तथा प्रेम के सार्वभौमिक मूल्यों पर बल देता है।

शैक्षिक मूल्यों के विभिन्न प्रकार

(1) आत्मनिष्ठ शैक्षिक मूल्य (Subjective educational values)–आत्मनिष्ठ शैक्षिक मूल्य का सम्बन्ध व्यक्ति की अपनी समझ और संकल्पना पर आधारित होता है।

(2) वस्तुनिष्ठ शैक्षिक मूल्य (Objective educational values)–उपर्युक्त धारणा के विपरीत कुछ लोगों का मानना है कि शैक्षिक मूल्य वस्तु के बाहरी गुणों पर निर्भर करते हैं। किसी वस्तु या विचार का शैक्षिक मूल्य सम्बन्धित वातावरण के अनुसार होता है। यदि वातावरण अनुकूल न हुआ तो सम्भव है कि किसी वस्तु अथवा विचार का कोई प्रभाव अध्यापक या विद्यार्थी पर न पड़े । तब उन्हें कोई भी शैक्षिक मूल्य प्राप्त न होगा।

(3) तात्कालिक मूल्य (Immediate values)– हमारी कुछ रूचियाँ, इच्छायें और आवश्यकतायें होती हैं जो मूल्य इन सबसे सम्बन्धित होते हैं उन्हें **तात्कालिक मूल्य** कहा जाता है। तात्कालिक मूल्य उनसे सम्बन्धित वस्तुओं से ही प्राप्त होता हैं। उदाहरणार्थ यदि किसी विद्यार्थी की रूचि वीरगाथाओं से भरी हुई पुस्तिका के पढ़ने में है तो इस प्रकार की पुस्तकों के पढ़ने से ही उसे इनसे सम्बन्धित मूल्य प्राप्त होगा।

(4) दूरस्थ मूल्य (Remote values)– अध्यापक और विद्यार्थी की अनेक इच्छायें हो सकती हैं जिन सबकी पूर्ति किसी प्रकार भी सम्भव नहीं है। अतः कई इच्छाओं में से हमें केवल कुछ इच्छाओं को ही चुनना पड़ता है। इच्छाओं के इस चयन में हमें बुद्धि और भावना का उपयोग करना चाहिए। जो इच्छाये हमारी बुद्धि और भावना से सम्बन्धित होती हैं उनसे हमें तत्सम्बन्धित मूल्य प्राप्त होते हैं। इस प्रकार के मूल्य निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं–

(i) साधन मूल्य (Instrumental values)– जिन मूल्यों के आधार पर हमें कुछ अन्य उपयोगी मूल्य प्राप्त होते हैं उन्हें साधन मूल्य कहा जा सकता है। उदाहरणार्थ–कोई व्यक्ति भारतीय संगीत–शास्त्र के अनुसार गायक बनना चाहता है तो इसके लिए उसे एक तानपुरा तथा संगीत की कुछ सम्बन्धित पुस्तकों की आवश्यकता होगी । तानपुरा तथा इस प्रकार की पुस्तकें साधन के रूप में उसके लिए बहुत ही मूल्यवान हैं। इन साधनों के सहारे उसके उद्देश्य की पूर्ति सम्भव है। अतः ये सामग्रियाँ साधन–मूल्य कही जा सकती हैं।

(ii) साध्य मूल्य (Intrinsic values)– यह मूल्य शुद्धतः अपने पर निर्भर होता है। उदाहरणार्थ– हम मेज और कुर्सी के सहारे पढ़–लिख सकते हैं। ये वस्तुयें हमारे लिए अपने में ही मूल्यवान हैं। इनका मूल्य स्थायी और सार्वभौमिक होता हैं।

(5) सौन्दर्यात्मक मूल्य (Aesthetic values) – कुछ ऐसे मूल्य भी हो सकते हैं जिनसे हमें किसी रसानुभूति का अनुभव होता है। इस प्रकार के मूल्यों को सौन्दर्यात्मक मूल्य कहा जाता है। यदि हम किसी विषय के अध्ययन में किसी विशिष्ट आनन्द का अनुभव करते हैं तो उसमे हमें सौन्दर्यात्मक मूल्य की अनुभूति होती है।
जैसे, कोई संगीत में इस मूल्य का अनुभव कर सकता है तो कोई गणित, भौतिक शास्त्र अथवा चित्रकला के क्षेत्र में यह अनुभव प्राप्त कर सकता है।

मूल्य शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व– शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिसके अन्तर्गत बालक सत्य के आधार पर अहिंसा द्वारा प्रेमपूर्वक जीवनयापन करना सीखें। शिक्षा से ऐसा मनुष्य बनाना है जो स्वयं स्वेच्छा से शाश्वत मूल्यों के पालन का प्रयास करें, जिससे व्यक्ति, समाज सभी का कल्याण सम्भव हो। इसके लिए शिक्षा द्वारा व्यक्ति की आत्मा जाग्रत करना आवश्यक है, जिसके लिए आध्यात्म की आवश्यकता है। वर्तमान समय में विज्ञान ने आध्यात्म की जड़ें उखाड़ फेंकी हैं। शिक्षा में आध्यात्म को भी स्थान दिया जाना चाहिए तभी मूल्यों का धाराशायी वृक्ष पुनः खड़ा हो सकता है। अन्यथा आज की शिक्षा के स्तर को देखते हुए भारतीय संस्कृति के मूल्यों का संरक्षण दुष्कर प्रतीत होता है।

भारतीय संविधान नैतिक मूल्यों की अमूल्य निधि है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में जो मूल्य बनाए गए हैं उन्हें शिक्षा द्वारा छात्रों के जीवन में उतारा जा सकता है। वे मूल्य हैं– प्रजातन्त्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता,

न्याय, सहिष्णुता, व्यक्ति की गरिमा, विचार, अभिव्यक्ति, ईमानदारी, उपकार, विनम्रता, अहंकार, निस्वार्थता, समभाव, मन, वचन, कर्म की एकता के गुण। इन्हीं मूल्यों को छात्रों को अपने जीवन में उतारना है। बालक को मूल्यपरक शिक्षा देनी चाहिए। वर्तमान समय में मूल्यों को बताने के लिए मात्र उपदेश ही पर्याप्त साधन माना जाता है। इसमें अनुभूति, चिन्तन तथा क्रियान्विति नहीं है। मूल्यपरक शिक्षा में शिक्षार्थी को अधिक से अधिक अनुभव से जोड़ना चाहिए। छात्रों में आपसी सहयोग एवं सद्भावना के माध्यम से धर्मों के प्रति आदर को अधिकाधिक अवसर प्रदान किए जाने चाहिए। शिक्षक का व्यवहार, वैयक्तिक मूल्यपरक शिक्षण तभी दे सकता है जब उसमें स्वयं अच्छे मूल्य विकसित होंगे। शिक्षक में यदि स्वयं ही, अच्छे मूल्य विकसित होंगे तो छात्र शिक्षक को उदाहरण के रूप में प्रेरणा बना सकता है जिस प्रकार कहावत है कि 'उपदेश से उदाहरण श्रेष्ठ है।' इसी के आधार पर कह सकते हैं कि शिक्षक का स्वयं का आचरण भी ऐसा होना चाहिए कि उसका व्यक्तित्व छात्रों के लिए अनुकरणीय बन जाए। क्योंकि हर छात्र का आदर्श उसका शिक्षक ही होता है। वह वही कार्य करने की चेष्टा करता है जो शिक्षक करता है। शिक्षक जिन मूल्यों को छात्रों को देना चाहता है वह स्वयं उसमें भी व्यक्त होने चाहिए। वर्तमान पाठ्यक्रम में नैतिक मूल्य सम्बन्धी अंशों को बढ़ाना चाहिए, पाठ्य–पुस्तकों में भी नैतिक मूल्य सम्बन्धी अंश होने चाहिए।

वर्तमान समाज में मूल्यों का ह्रास हमारी शिक्षा के लिए एक गम्भीर चुनौती है, जिसे स्वीकार करके शिक्षा को ही मूल्यों का विकास करना होगा तथा शिक्षा में सुधार द्वारा ही इन मूल्यों के ह्रास को रोका जा सकता है। कुशिक्षा स्वयं के लिए ही नहीं अपितु समाज और राष्ट्र के लिए भी हानिकारक होती है। अतः शिक्षा में शिवत्व पर बल देना चाहिए। **डॉ0 दौलतसिंह कोठारी** ने ठीक ही कहा है कि शिक्षा में नई–नई कृत्रिम वस्तुओं का प्रयोग हो रहा है। अनुमान है कि आगामी दो दशकों में दो की जगह चार शिक्षा आयोग होंगे तथा एक तो पूर्णतः शिक्षा में कृत्रिम योग्यता पद्धति से सम्बन्धित होगा। कृत्रिम योग्यता का अर्जन द्रुतगति से हो रहा है। कुछ लोगों ने इस युग को सौर युग कहा है, तो हिरोशिमा बम विस्फोट से ज्यादा विस्फोट "न्यूक्लीयर बम" ने मनुष्य को विनाश के कगार पर खड़ा कर दिया है। ऐसे में शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ गई।

वर्तमान समय में हम विशाल एवं आश्चर्यजनक सत्य 'विज्ञान' की ओर झुक रहे हैं। ऐसे में यदि अहिंसा और विज्ञान साथ–साथ होंगे तो वहाँ समता, न्याय, वैभव एवं आनन्दपूर्ण जीवन होगा। यह केवल बुद्ध, अरविन्द, टैगोर एवं गाँधी के देश में ही सम्भव है। विज्ञान और तकनीकी के विस्तार के साथ विवेक और बुद्धि का संकुचन हो रहा है। ज्ञान बढ़ रहा है और व्यतित्व का पतन हो रहा है। जनसंख्या विस्फोट, हिंसा का ताण्डव–नृत्य, पारस्परिक शत्रुता, घृणा, मारकाट फैली है। यह मानव स्थिति की भयानक रूपरेखा है। इस पर वैज्ञानिक बहुत कम विचार कर रहे हैं। आज आधे से ज्यादा वैज्ञानिक और इंजीनियर संहारक यंत्रों का निर्माण कर रहे हैं। इन सब को सही दिशा, शिक्षा ही दे सकती है। विद्यालयों में संयम तथा सामाजिक व नैतिक मूल्यों का सृजन आवश्यक है। नैतिक मूल्य अच्छे तथा बुरे कार्यों के बीच अंतर पैदा करने वाले मानक है। जो किसी भी सज्जन व्यक्ति का एक प्रमुख गुण होता है क्योंकि इन्हीं नैतिक मूल्यों के द्वारा वह अपने व्यवहार तथा कार्यों को नियंत्रित करता है। नैतिक मूल्यों का किसी भी समाज के उन्नति तथा पतन में एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसलिए यह भी कहा जाता है कि नैतिक मूल्यों के बिना मनुष्य तथा पशु में कोई भेद नहीं होता है। नैतिक मूल्यों का हमारे जीवन में विशेष महत्व है क्योंकि अनुशासन, निष्ठा, ईमानदारी, दयाभाव व नैतिक मूल्य है जो किसी व्यक्ति को जीवन में सफल बनाने में अपना अहम योगदान देते हैं। मूल्य शिक्षा की आवश्यकता तो सदैव से रही है, आज भी है और कल भी रहेगी। आज तो इसकी बहुत अधिक आवश्यकता है।

(1) मूल्यों के बिना मनुष्य का व्यवहार निश्चित एवं नियमित नहीं हो सकता, नियमित नहीं हो सकता। अतः मनुष्य के आचार–विचार को सही दिशा देने के लिए मूल्य शिक्षा आवश्यक होती है।

(2) आज पूरे संसार में मूल्यों में ह्रास हो रहा है। हमारे देश की तो अजीब स्थिति है, हम पुराने मूल्य छोड़ते जा रहे हैं और नए मूल्य निश्चित नहीं कर पा रहे हैं।

(3) मूल्य शिक्षा के तीन पद होते हैं– संज्ञानात्मक {Cognative}, भावात्मक {Affective} और क्रियात्मक {Conative} । हमें मूल्यों का ज्ञान तो है परन्तु वे हमारे भावात्मक पक्ष के अंग नहीं हैं। तब उनके अनुसार आचरण करने का प्रश्न ही नहीं उठता। आज आवश्यकता है मूल्यों को भावना में उतारने की, उन्हें आचरण का आधार बनाने की। अब यह कार्य सभी सामाजिक संस्थाओं को मिलकर करना होगा।

(4) हमारे समाज में बच्चे–बच्चे की जुबान पर सत्य, अहिंसा और ब्रह्मचर्य विराजमान है। आज हमारे देश में लोकतन्त्र है। विधायक, सांसद और मन्त्री सभी गोपनीयता एवं राष्ट्रहित की कसम खाते हैं, लेकिन इन कसमों पर कितने लोग अमल करते हैं। किसी भी विभाग में झांक कर देखिए तो काम कम ओर रिश्वत अधिक दिखाई देगी।

सब एक–दूसरे का शोषण करने पर उतारू हैं। इसका एक ही उत्तर है– मूल्यों का अभाव। तब मूल्य शिक्षा की व्यवस्था होनी ही चाहिए।

(5) मूल्यों के अभाव में भाषा अर्थहीन हो गई है, व्यवहार अनिश्चित हो गया है, लोगों का एक–दूसरे पर से विश्वास उठ गया है, समाज में अराजकता का नंगा नृत्य हो रहा है और मनुष्य तनावपूर्ण जीवन जी रहा है। यदि हम समय रहते नहीं चेते तो वह दिन दूर नहीं जब हम पुनः बर्बरता के युग में प्रवेश कर जाएँगे, यदि हम मानव सभ्यता और संस्कृति की सुरक्षा चाहते हैं तो हमें मूल्य शिक्षा पर बल देना होगा।

(6) इस युग में हमारे देश सहित अन्य देशों में जितने भी शिक्षा आयोग और शिक्षा समितियों का गठन हुआ है सभी ने किसी न किसी रूप में मूल्य शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया है। **कोठारी आयोग (1964–66) ने कहा था कि आज के युवकों में सामाजिक व नैतिक मूल्यों के प्रति जो अवहेलनात्मक दृष्टिकोण है, उसके कारण ही सामाजिक व नैतिक संघर्ष हो रहे हैं। इसी कारण हमारे लिए यह आवश्यक है कि हम शिक्षा व्यवस्था को मूल्यपरक बनायें।** आयोग ने निम्नलिखित सुझाव दिये–

(1) केन्द्र व राज्य सरकारों के अधीन सभी विद्यालयों में नैतिक, सामाजिक व आध्यात्मिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा दी जाए और निजी संस्थाओं से भी इनका पालन करने को कहा जाय।

(2) समय सारिणी में इन मूल्यों से सम्बन्धित शिक्षा के कुछ कालांश निश्चित किये जायें जो किन्हीं विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा न लिये जायें वरन् विद्यालय के सामान्य शिक्षक ही इस उत्तरदायित्व का निवर्हन करें।

(3) विश्वविद्यालय स्तर पर धर्म शिक्षा से सम्बन्धित विभाग छात्रों और शिक्षकों की दृष्टि से विशिष्ट साहित्य तैयार करे जिसके द्वारा मूल्यों का सकारात्मक विकास हो सके।

(4) सभी धर्मों के छात्रों के लिए ऐसी पाठ्य–पुस्तकों की व्यवस्था की जाय जो कि विभिन्न धर्मो के आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक ज्ञान करा सके।

(7) **राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986)** में कहा गया है कि, **"हमारे बहुवर्गीय समाज में शिक्षा को सर्वव्यापी और शाश्वत मूल्यों को प्रोत्साहित करना चाहिये जिससे भारतीय जन में राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़े और संकीर्ण सम्प्रदायवाद, धार्मिक अतिवाद, हिंसा, अन्धविश्वास व भाग्यवाद को समाप्त किया जा सके हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि मनुष्य अकेला शून्य में निवास करने वाला प्राणी नहीं है। उसकी मूल्यपरक शिक्षा उसके विशिष्ट सामाजिक तथा सांस्कृतिक सन्दर्भ जुड़ी होनी चाहिये और विश्वजनीन व शाश्वत मूल्यों से भी उसका सम्बन्ध होना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टिकोण, समानता, पर्यावरण संरक्षण, प्रजातंत्र, स्वतंत्रता, बन्धुत्व, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता आदि मूल्यों की शिक्षा सभी स्तरों के लिए आवश्यक है। प्रारम्भिक स्तर पर मूल्यपरक शिक्षा ठोस गतिविधियों तथा जीवन की परिस्थितियों के अनुरूप होनी चाहिए। माध्यमिक तथा अन्य उच्च स्तरों पर विद्यार्थी स्वयं मूल्यों की तार्किकता, को समझकर उन्हें विचार व कार्य रूप में ढाल सकेंगे।"** राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में इस संबध में निम्नलिखित तीन बातें कही गयीं है

(1) मूल्यों (सामाजिक व नैतिक) के विकास की दृष्टि से पाठ्यक्रम में संशोधन कि जाय जिससे वह इन मूल्यों का विकास करने का सशक्त साधन बन सके।

(2) शिक्षा द्वारा सार्वभौमिक व शाश्वत मूल्यों का विकास किया जाये जिससे धार्मिक कट्टरता, हिंसा, और अंधविश्वासों का दमन करे।

(3) मूल्य शिक्षा के लिए ऐसा पाठ्यक्रम बनाया जाये जो मूल्यों का सकारात्मक विकास करे। इसमें राष्ट्रीय विरासत व राष्ट्रीय लक्ष्यों पर बल दिया जाये।

मूल्य शिक्षा के सन्दर्भ में दूसरा प्रश्न है कि भारत में बच्चों को किन मूल्यों की शिक्षा दी जाए? बस यही टेढ़ा प्रश्न है। इस प्रश्न का उत्तर आज तक निश्चित नहीं किया जा सका है। कुछ विद्वान भारत में भारतीय मूल्यों {Indian Values} की शिक्षा देने की बात करते हैं। अब प्रश्न उठता है– भारतीय मूल्य क्या हैं। मानवशास्त्री मूल्यों को सांस्कृतिक लक्षणों के रूप में स्वीकार करते हैं, पर भारत विभिन्न संस्कृतियों का देश है और इन संस्कृतियों के आदर्श, विश्वास एवं मानदण्ड भिन्न–भिन्न हैं। उनमें से वर्तमान भारत में किन्हें महत्व दिया जाए, यह निश्चित करना कठिन कार्य है। मानवशास्त्रियों की दृष्टि से भारत की मूल संस्कृति आर्य संस्कृति है और यह संस्कृति चार वर्ण– ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य और शूद्र; चार आश्रम –ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास; चार पुरूषार्थ–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष; चार मार्ग– ज्ञान, कर्म, भक्ति और योग और पाँच महाव्रत–सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह और ब्रह्मचर्य की संस्कृति है। संस्कार प्रधान जीवन और अतिथि सत्कार इसकी अन्य विशिष्टताएँ हैं। उनकी दृष्टि से भारत में इन्हीं मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए। समाजशास्त्रीयों का तर्क है कि बच्चों में मूल्यों

का विकास अपने–अपने समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक क्रियाओं में भाग लेने से स्वाभाविक रूप से होता है, वे अपने समाज, संस्कृति और धर्म के आदर्शों और नैतिक नियमों को स्वाभाविक रूप से सीखते हैं, हमें उन्हें ही महत्त्व देना चाहिए। और उन्हें ही मूल्यों के रूप में विकसित करना चाहिए। इस सन्दर्भ में कुछ विद्वानों का तर्क है कि हमारे ऊपर सर्वाधिक प्रभाव धार्मिक आदर्श एवं नियमों का होता है। और धर्म के नाम पर हमारे देश में मूल रूप से चार धर्मों के व्यक्ति रहते हैं– हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म और पारसी धर्म। हिन्दू धर्म में मूल रूप से पाँच सम्प्रदाय हैं– सनातन धर्म, आर्य समाज, जैन धर्म, बौद्ध धर्म और सिक्ख धर्म। यदि ध्यानपूर्वक देखा–समझा जाए तो स्पष्ट होगा कि सनातन धर्म में भक्ति, आर्य समाज में विवेक, जैन धर्म में अहिंसा, बौद्ध धर्म में करूणा, सिक्ख धर्म में गुरू भक्ति, इस्लाम धर्म में समानता एवं भाई चारे, ईसाई धर्म में प्रेम एवं सेवा और पारसी धर्म में पवित्रता एवं दया पर विशेष बल दिया गया है। और इनमें कहीं कोई टकराव नहीं है अतः भारत में इन्हीं धार्मिक मूल्यों {Religious Values} की शिक्षा दी जाए। परन्तु बिडम्बना यह है कि लोग धर्म का वास्तविक अर्थ ही नहीं समझते। गाँधीवादियों का तर्क है कि भारत में गाँधी जी द्वारा प्रतिपादित एकादश व्रत– (1) सत्य, (2) अहिंसा, (3) अस्तेय, (4) अपरिग्रह, (5) ब्रह्मचर्य, (6) अस्वाद, (7) अभय, (8) अस्पृश्यता निवारण, (9) कायिक श्रम, (10) सर्वधर्म समभाव और (11) विनम्रता की ही मूल्यों के रूप में शिक्षा देनी चाहिए।

कुछ विद्वानों का मत है कि यदि हम गाँधीवादी उपरोक्त 11 मूल्यों में अपने 6 राजनैतिक मूल्यों – (1) स्वतन्त्रता, (2) समानता, (3) भ्रातृत्व, (4) समाजवाद, (5) धर्मनिरपेक्षता और (6) न्याय को और जोड़ दें तो इनमें समस्त भारतीय मूल्यों {Indian Values} का प्रतिनिधित्व हो जाएगा। कुछ विद्वानों का तर्क है कि वर्तमान में भारत में सबसे अधिक ह्रास हुआ है नैतिक मूल्यों में, अतः हमें सबसे अधिक बल नैतिक मूल्यों {Moral Values} - सत्यता, ईमानदारी और कर्त्तव्यपरायणता के विकास पर देना चाहिए। मानवतावादी भारतीय चिन्तक मानवीय मूल्यों {Human Values} की शिक्षा की बात करते हैं। मानवतावादी चिन्तक मनुष्य के केवल ऐहिक जीवन पर ही विचार करते हैं और उस मार्ग का समर्थन करते हैं जो मनुष्य जाति को समग्र रूप से लाभान्वित करे। फिर अपना भारत तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में विश्वास करता है, अतः यहाँ उन्हीं मूल्यों की शिक्षा देनी चाहिए जिनके पालन से मनुष्य जाति का समग्र रूप से भला हो इन मूल्यों में ये विद्वान प्रेम, सहानुभूति, सहयोग, ईमानदारी, समानता, भ्रातृत्व, शान्ति और सहअस्तित्व को विशेष महत्त्व देते हैं। इनका विश्वास है कि इन मूल्यों के पालन से ही शोषण रहित मानव समाज और युद्ध रहित विश्व समुदाय का निर्माण हो सकता है। फिर वर्तमान सन्दर्भ में हमें अपने नागरिकों में मानवीय मूल्यों के साथ राजनैतिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों का भी विकास करना है। कुछ विद्वान भारत में केवल सार्वभौमिक मूल्यों {Universal Values} की शिक्षा की बात करते हैं। उनका तर्क है कि जो मूल्य सार्वभौमिक हैं, वे भारतीय भी हैं, मानवीय भी हैं और नैतिक भी हैं। पर सच बात तो यह है कि विद्वान सार्वभौमिक मूल्यों के विषय में ही एकमत नहीं हैं। कुछ विद्वान केवल सत्य को सार्वभौमिक मूल्य मानते हैं, कुछ सत्यम् शिवम, और सुन्दरम् को, कुछ प्रेम, शान्ति, अहिंसा और सद्व्यवहार को और कुछ प्रेम, सच्चाई और ईमानदारी को। फरवरी, 1999 में भारतीय संसद में जो एस.वी. चह्वाण समिति की रिपोर्ट हुई थी उसमें सत्य, सदाचरण, शान्ति, प्रेम और अहिंसा को सार्वभौमिक मूल्य माना गया है। हमें अपने वर्तमान भारतीय समाज की दृष्टि से कुछ सर्वमान्य मूल्यों की शिक्षा की बात तो निश्चित करनी ही होगी।

इस बीच हमारे देश में मूल्य शिक्षा पर सबसे अधिक कार्य किया है राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद {NCERT} ने। दो दशकों के परिश्रम के बाद उसने मूल्य सम्बन्धी एक दस्तावेज भी प्रकाशित किया था जिसमें 83 मूल्यों की एक लम्बी सूची प्रकाशित की थी। एन.सी.ई.आर.टी. के ही कुछ लोगों को यह सूची बहुत लम्बी और अटपटी लगी और उन्होंने बहुत मन्थन के बाद स्कूली शिक्षा के लिए पंचमूल्य सूत्र तैयार किया। ये पाँच मूल्य हैं– सफाई, सच्चाई, श्रम, समानता और सहयोग। कोई भी हो वह तीन मूलभूत मूल्यों पर आधारित होता है– प्रेम, सहानुभूति और सहयोग। इनके अभाव में कोई समाज जीवित नहीं रह सकता। तब वर्तमान भारत में इन मूल्यों की शिक्षा दी जा सकती है, और दी भी जानी चाहिए। आज हमारे देश में सबसे बड़ी आवश्यकता है– सांस्कृतिक सहिष्णुता की। अतः इसे मूल्य के रूप में विकसित करना आवश्यक है।

भारत में अनेक धर्मों के व्यक्ति रहते हैं। वर्तमान भारत में किसी धर्म विशेष पर आधारित मूल्यों की शिक्षा देना सम्भव नहीं। पर किसी भी धर्म पर आधारित नैतिक नियमों– सत्यता, ईमानदारी और कर्त्तव्यपरायणता की शिक्षा देने में तो किसी को कोई एतराज नहीं हो सकता। राजनैतिक दृष्टि से हमारे देश में लोकतन्त्र है। हमारा लोकतन्त्र छह मूल सिद्धान्तों– स्वतन्त्रता, समानता, भ्रातृत्व, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और न्याय पर

आधारित है। तब देश के समस्त नागरिकों में इन्हें मूल्यों के रूप में विकसित करना आवश्यक है। आर्थिक दृष्टि से हमारा देश विकासशील देश है। आर्थिक क्षेत्र में हम औद्योगिकीकरण की ओर बढ़ चुके हैं। दोनों ही दृष्टियों से वर्तमान भारत में श्रम गरिमा की महत्ता स्वीकार करने की आवश्यकता है। अतः इसे भी मूल्यों के रूप में विकसित करना चाहिए। आज भारत के प्रत्येक नागरिक में राष्ट्र समर्पण की भावना को मूल्य के रूप में विकसित करना आवश्यक है। वर्तमान भारतीय शिक्षा जगत की सबसे ज्वलन्त समस्या छात्रों में चारित्रिक दोष की है। वर्तमान समय में मानवीय मूल्यों के प्रति आस्थाओं के टूटने–बिखरने के कारण सामाजिक एवं नैतिक संकट की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। यदि विद्यार्थियों में सामाजिक तथा नैतिक मूल्यों के प्रति आस्था विकसित नहीं की गयी तो भविष्य में समाज में अराजकता और विघटन की स्थिति पैदा होने की संभावना है। **स्वामी रामकृष्ण परमहंस** ने कहा था कि ''**चरित्रवान बनो, जगत अपने आप मुग्ध हो जायेगा।**'' **टैगोर** के अनुसार–''**चरित्र के विकास के द्वारा ही प्रेम, सहयोग, सहानुभूति दया, ईमानदारी, न्यायप्रियता तथा कर्त्तव्य व निष्ठा आदि गुणों को विकसित किया जा सकता है।**'' **गाँधी** जी ने कहा कि ''**ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य चरित्र निर्माण है।**'' चरित्र निर्माण के प्रति **गाँधी** जी कितने आग्रही थे, यह उनके इस कथन से पता लगता है– ''**सचरित्रता के अभाव में केवल बौद्धिक ज्ञान सुगन्धित शव के समान हैं।**'' **चक्रवर्ती राजगोपालाचारी** ने कहा कि, ''**विद्यार्थियों का चरित्र नैतिक शिक्षा से ही सम्भव है और उसी के आधार पर राष्ट्र का विकास संभव है।**''

मूल्य शिक्षा से सम्बन्धित अन्तिम प्रश्न है कि बच्चों को मूल्य शिक्षा कब और कैसे दी जाए? इस सन्दर्भ में हमें सर्वप्रथम मूल्य निर्माण के स्त्रोतों {Sources} और मूल्य निर्माण की प्रक्रिया {Process} इन दोनों को समझना होगा।

मूल्य निर्माण के स्त्रोत– मनुष्य जीवन के मुख्य आयाम हैं– सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनैतिक। समाजशास्त्रियों की दृष्टि से ये ही मूल्य निर्माण के मुख्य स्त्रोत हैं।

1. समाज {Society} – मनुष्य जिस समाज में पैदा होता है उसी के सदस्यों के साथ उसकी अन्तःक्रिया होती है और इस अन्तःक्रिया द्वारा वह उसी समाज के व्यवहार मानदण्ड सीखता है; उन्हीं के प्रति उसमें आस्था पैदा होती है, उन्हीं को वह महत्त्व देता है और आगे चलकर वे ही उसके व्यवहार को निर्देशित एवं नियन्त्रित करने लगते हैं और उसके मूल्य बन जाते हैं। इस प्रकार समाज मूल्य निर्माण का आधारभूत स्त्रोत होता है।

2. संस्कृति {Culture} – किसी समाज की सबसे बड़ी विशेषता उसकी संस्कृति होती है। मनुष्य जिस समाज में रहता है सर्वप्रथम उसी की संस्कृति अर्थात् उसी के रहन–सहन एवं खान–पान की विधियों, व्यवहार प्रतिमानों, भाषा–साहित्य, धर्म–दर्शन एवं आदर्श और विश्वासों के विशिष्ट रूप को सीखता और धारण करता है, फिर धीरे–धीरे उसमें उनके प्रति आस्था उत्पन्न हो जाती है, वह उन्हें महत्त्व देने लगता है और उससे उसका व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होने लगता है। इस प्रकार संस्कृति मूल्य निर्माण का दूसरा बड़ा स्त्रोत होता है।

3. धर्म {Religion} – किसी समाज की संस्कृति का सबसे अधिक प्रभावशाली तत्त्व होता है– धर्म। देखने में यह आता है कि बच्चा जिस धर्म को मानने वाले परिवार में पैदा होता है और रहता है वह उसी धर्म के नैतिक नियमों को स्वीकार करता है, उन्हें ही महत्त्व देता है और उन्हीं के द्वारा उसका व्यवहार निर्देशित एवं नियन्त्रित होने लगता है। इस प्रकार धर्म मूल्य निर्माण का मुख्य स्त्रोत होता है।

4. अर्थतन्त्र {Economic Order} – किसी समाज, राज्य अथवा राष्ट्र का अर्थतन्त्र भी अपने में मूल्य निर्माण का स्त्रोत होता है। उदाहरण के लिए जिस समाज में पूँजीवादी, अर्थव्यवस्था होती है उसमें दो वर्गो का निर्माण होता है– शोषक वर्ग और शोषित वर्ग और शोषित वर्ग के व्यक्तियों में शोषक वर्ग के व्यक्तियों के प्रति घृणा और द्वेष का भाव उत्पन्न होता है और दूसरी तरफ जिस समाज में समाजवादी अर्थव्यवस्था होती है उसमें योग्य का आदर होता है, सब एक–दूसरे से प्रेम करते हैं, सब एक–दूसरे को सहयोग करते हैं।

5. राज्य तन्त्र {Political order} –राज्य का प्रभुत्व तो प्रारम्भ से ही रहा है, यह बात दूसरी है कि एकतन्त्र शासन प्रणाली में उसका प्रभुत्व अपेक्षाकृत अधिक होता है और लोकतन्त्र शासन प्रणाली में अपेक्षाकृत कम होता है। तब राज्य तन्त्र द्वारा निश्चित सिद्धान्तों एवं आदर्शो को व्यक्ति द्वारा महत्त्व देना स्वाभाविक है। इस प्रकार राज्य तन्त्र भी मूल्य निर्माण का स्त्रोत होता है।

मूल्य शिक्षा की प्रक्रिया– मनुष्यों में मूल्यों का निर्माण कैसे होता है, इस विषय पर इस युग में सबसे अधिक विचार किया है मनोवैज्ञानिकों, मानवशास्त्रियों और समाजशास्त्रियों ने। मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से मनुष्यों में मूल्यों के निर्माण की प्रक्रिया के तीन पद होते हैं– संज्ञानात्मक {Cognative} भावात्मक {Affective} और क्रियात्मक {Conative} । उनके अनुसार बच्चा सर्वप्रथम अपने समाज के व्यवहार मानदण्ड, नैतिक नियम, सिद्धान्त एवं आदर्शों को बिना सोचे–समझे स्वीकार करता है, उसके बाद उसमें जैसे–जैसे विवेक शक्ति का विकास होता है, वह उनके औचित्य के बारे में सोचने–समझने लगता है और उन्हें तद्नुकूल महत्त्व देने लगता है और उन्हें अपने अन्तर्मन में स्थान देने लगता है और जब वे उसकी भावना से जुड़कर उसके अन्तर्मन में स्थान बना लेते हैं तो उसके व्यवहार को निदेंशित एवं नियन्त्रित करने लगते हैं। जब तक ये उसके व्यवहार को निर्देशित एवं नियन्त्रित नहीं करते तब तक इन्हें मूल्य नहीं कहा जा सकता। मानवशास्त्री मूल्यों को सांस्कृतिक लक्षणों के रूप में स्वीकार करते हैं। उनकी दृष्टि से मूल्यों का निर्माण स्वसंस्कृति ग्रहण {Enculturation} की प्रक्रिया द्वारा होता है। समाजशास्त्रियों की दृष्टि से मनुष्यों में मूल्यों का निर्माण समाजीकरण की प्रक्रिया के साथ–साथ होता हैं।

सामाजिक क्रियाओं में भाग लेने से सामाजिक आदर्श एवं विश्वास आदि का, सांस्कृतिक क्रियाओं में भाग लेने से सांस्कृतिक आदर्श एवं विश्वास आदि का, धार्मिक क्रियाओं मं भाग लेने से धार्मिक आदर्श एवं विश्वास आदि का, आर्थिक क्रियाओं में भाग लने से आर्थिक आदर्श एवं विश्वास आदि का और राजनैतिक क्रियाओं में भाग लेने से राजनैतिक आदर्श एवं विश्वासों का, औरये ही उसके मूल्यों का रूप धारण करते हैं। इन सबके निर्माण में मुख्य भूमिका परिवार, समुदाय और विद्यालय की होती है अतः यहाँ उनकी भूमिका एवं उत्तरदायित्व पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

परिवार और मूल्य शिक्षा –परिवार बच्चे की सर्वप्रथम पाठशाला है। परिवार में ही बच्चों में मूल्यों की नींव रखी जाती है। प्रारम्भ में बच्चे अपने माता–पिता, भाई–बहन आदि का अनुकरण कर व्यवहार की विधियाँ सीखते हैं। परिवार के युवा, प्रौढ़ और वृद्ध सभी व्यक्तियों को बच्चों के सामने मूल्य आधारित आचरण करना चाहिए। बल्कि माता–पिता को अपने बच्चों को कोरे उपदेश कभी नहीं देने चाहिए। वे स्वयं मूल्य आधारित आचरण करें और मूल्य आधारित जीवन जीएं। इसके साथ–साथ बच्चों के पर्यावरण में जो भी घटनाएं घटें उनके अच्छे–बुरे होने का ज्ञान कराएँ। उन्हें बच्चों के सही व्यवहार एवं आचरण की प्रशंसा और अनुचित व्यवहार एवं आचरण की निन्दा करनी चाहिए। परिवार के सदस्यों को समाज द्वारा स्वीकृत व्यवहार विधियों की चर्चा करनी चाहिए और बच्चों को केवल दुसरों की अनुक्रिया के आधार पर ही नहीं अपितु कुछ मूलभूत आधारों पर अपना व्यवहार निश्चित करना चाहिए। परिवार के सदस्यों को चाहिए कि वे अपने बच्चों के मूल्य आधारित व्यवहार की प्रशंसा करें और मूल्य प्रतिकूल व्यवहार के प्रति अन्यथा अनुक्रिया करें। बच्चों से प्रेम करें, मोह नहीं।

समुदाय और मूल्य शिक्षा– हम जानते हैं कि मूल्यों का निर्धारण समाज द्वारा होता है और यह कार्य एक दिन में नहीं, युग–युग के अनुभवों के अधार पर किया जाता है। इन मूल्यों को हम मुख्य रूप से पांच वर्गों में बाँट सकते हैं– सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनैतिक और आर्थिक । मनुष्य जन्म से मरण तक समुदाय में ही तो रहता है। यदि हम बच्चों में उचित मूल्यों का विकास करना चाहते हैं, उन्हें मूल्य आधारित जीवन जीने की ओर अग्रसर करना चाहते हैं तो पहले हमें स्वयं वैसा करना होगा। इन सबका विकास तो समुदाय में ही सम्भव हैं। जो समुदाय संगठन सच्चे मायनों में समाज सेवा कार्य कर रहे हैं इनमें हम जितनी अधिक गति लाएंगे, बच्चों पर इनका उतना ही अधिक प्रभाव पड़ेगा। बच्चों को प्रारम्भ से ही इन कार्यो में भाग लने के अवसर देने चाहिए। जब वे दीन–दुखियों के सम्पर्क में आएंगे तो उनके हृदय में उनके प्रति सहानुभूति जागृत होगी एवं वे दीनों पर दया करना सीखेंगे, और फिर धीरे–धीरे ये ही उनके मूल्य बन जाएंगे। प्रत्येक धर्म में कुछ नैतिक नियमों का प्रतिपादन किया गया है धर्म में हमारी आस्था होती है और हम इन नियमों का पालन भी करते हैं पर थोड़ा संकीर्ण रूप में यदि ध्यानपूर्वक देखा जाए तो सभी धर्मों के नैतिक नियम समान हैं। समुदाय को चाहिए कि वह धार्मिक उदारता बरते और बच्चों को इस सत्य से अवगत कराए। आवश्यकता है मूल्य आधारित जीवन जीने वालों की प्रशंसा करने की, उनका सम्मान करने की, उनकी पूजा करने की न कि शक्तिशाली धनवान की। समुदाय को गैरमूल्य जीवन जीने वालों को दण्ड भी देना चाहिए।

विद्यालय और मूल्य शिक्षा– विद्यालयों में मूल्य शिक्षा पर बल दिया जाना चाहिए पर इस शिक्षा का विधान अलग विषय अथवा क्रिया के रूप में न करके विद्यालयों के समस्त विषयेां एवं क्रियाओं के साथ करना चाहिए। विद्यालयों का कार्य बच्चों द्वारा ग्रहण किए गए विश्वासों, आदर्शों, सिद्धान्तों और व्यवहार प्रतिमानों में काट–छांट कर उन्हें सही दिशा प्रदान करना होता है। विद्यालयों का सामाजिक सांस्कृतिक पर्यावरण मूल्यप्रधान हो। यहां सब छात्रों के साथ समान व्यवहार किया जाए, सबको समान अधिकार दिए जाएं और सबके साथ उचित न्याय किया जाए।
विद्यालयों में जितने भी विषय पढ़ाए जाते हैं उन सभी के शिक्षण के साथ छात्रों में उचित मूल्यों का विकास किया जा सकता है परन्तु इनमें भाषा और इतिहास दो विषय ऐसे हैं जिनके माध्यम से बच्चों में मूल्यों का विकास आसानी से किया जा सकता है। भाषा शिक्षण सम्बन्धी पाठ्य पुस्तकों मे प्रायः नीति सम्बन्धी लेख व कविताएं संकलित होती हैं, महापुरूषों की जीवनी संकलित होती है और वीर्य और शौर्य के प्रसंग संकलित होते हैं। सच पूछिए तो इनमें समाज के समस्त विश्वासों, आदर्शों और सिद्धान्तों का समावेश होता है। भाषा की पाठ्य पुस्तकों के लिए किसी भी पाठ को पढ़ाते समय शिक्षकों को उसमें निहित आदर्शों और सिद्धान्तों को बच्चों के सामने उजागर करें, उनके प्रति अनुकूल अनुक्रिया करें, मूल्यप्रधान घटनाओं एवं आचरण की प्रशंसा करें, गैरमूल्य आचरण के विरोध में अपनी सम्मति प्रकट करें और यह सब बच्चों की सक्रिय भागीदारी के बीच करें। शिक्षकों को बच्चों की अनुक्रिया पहले जाननी चाहिए, अपनी अनुक्रिया बाद में प्रकट करनी चाहिए। जब बच्चे सत्य–असत्य, अच्छे–बुरे और न्याय–अन्याय में स्वयं भेद करेंगे तो उनमें मूल्यों के प्रति जागरूकता आएगी। इतिहास में राजा–महाराजाओं के उत्थान–पतन की कहानी नहीं होता, उसमें जाति, समाज अथवा राष्ट्र विशेष की सभ्यता एवं संस्कृति का दिग्दर्शन होता है, मूल्यों का दिग्दर्शन होता है। माता पिता की आज्ञा पालन में राम ने राज्य सिंहासन के स्थान पर 14 वर्ष का वनवास स्वीकार किया था। महाभारत में प्रातः से संध्या समय तक युद्ध चलता था और रात्रि में लोग एक–दूसरे की कुशल क्षेम पूछते थे। शिवाजी ने मरते दम तक हिन्दुत्व की रक्षा की। गाँधी, गोखले, तिलक, जवाहर, पंत और मौलाना आदि लाखों देशभक्तों ने स्वतन्त्रता के लिए जेल की रोटियां खाई और अंग्रेजों के अत्याचार सहे। भगत सिंह हँसते–हँसते फाँसी के तखते पर चढ़ गया। दूसरी ओर इन मूल्यप्रधान घटनाओं के साथ गैरमूल्य घटनाएँ भी होती हैं। रावण ने सीता का हरण किया था। कौरवों ने भरे दरबार में द्रौपदी को निर्वस्व करने का प्रयास किया था। जयचन्द ने अपने भाई पृथ्वीराज को धोखा दिया था। इतिहास के पृष्ठों पर अंकित इन मूल्यप्रधान और गैरमूल्य प्रधान घटनाओं को स्पष्ट करना चाहिए। इससे बच्चे स्वाभाविक रूप से मूल्यप्रधान घटनाओं से प्रभावित होते हैं। भूगोल द्वारा बच्चों को देश–विदेश की प्राकृतिक, आर्थिक और राजनैतिक स्थिति का ज्ञान कराया जाता हैं, उन्हें संसार की विभिन्न मानव जीवन शैलियों का ज्ञान कराया जाता है और प्रकृति और मानव के सम्बन्धों को स्पष्ट किया जाता है। यदि शिक्षक थोड़ी ही सावधानी से उन्हें विश्व के समस्त देशों की अन्योन्याश्रिता का ज्ञान करा सकते हैं, उनमें विश्वबन्धुत्व की भावना जागृत कर सकते हैं, नागरिकशास्त्र में मूल रूप से नागरिकों के अधिकार एवं कर्त्तव्यों की चर्चा होती है। इसके शिक्षण के साथ राजनैतिक मूल्यों का विकास बड़ी सरलता से किया जा सकता है। नागरिकशास्त्र में अपने हित के साथ राष्ट्रहित की चर्चा होती है। यदि नागरिकशास्त्र का शिक्षक यह तथ्य उजागर कर सके कि राष्ट्रीय एकता स्वतः विकसित हो जाएगी। यह युग अन्तर्राष्ट्रीय युग है। अब हम अन्तर्राष्ट्रीय अवबोध के विकास पर बल दे रहे हैं। अपनी संस्कृति के मूल मन्त्र वसुधैव कुटुम्बकम का स्मरण कर इस भावना के विकास का प्रयत्न करेगा तो निश्चित रूप से सफल होगा। अर्थशास्त्र में मूल रूप से आय के स्त्रोत और साधनों की चर्चा की जाती है, माँग और पूर्ति के नियम बताए जाते हैं, उत्पादन में श्रम और साहस के महत्त्व को स्पष्ट किया जाता है और जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों से सचेत किया जाता है। शिक्षक अर्थशास्त्र के शिक्षण के साथ जीवन में श्रम, साहस और सहयोग के महत्त्व को स्पष्ट कर सकता है। कुछ लोगों का आरोप है कि विज्ञान ने ही हमे गैरमूल्य जीवन जीने की ओर अग्रसर किया है। कुछ सीमा तक यह बात अपने में सही भी है। पर यदि शिक्षक चाहें तो विज्ञान शिक्षण के साथ बच्चों में अनेक मूल्यों का विकास कर सकते हैं।

विज्ञान सदैव सत्य की खोज में अग्रसर रहता है। विज्ञान अध्ययन और विज्ञान प्रयोगशाला में कार्य करने से बच्चे सत्य, श्रम, धैर्य, साहस ओर अनुशासन का सच्चा पाठ पढ़ते हैं। जीव विज्ञान के माध्यम से उन्हें पर्यावरण शिक्षा दी जा सकती है, उनमें प्रकृति के प्रति प्रेम उत्पन्न किया जा सकता है। बच्चों के विकास में जितना महत्त्व पाठ्यचारी क्रियाओं का है उतना ही महत्त्व सहपाठ्यचारी क्रियाओं का है। मूल्य शिक्षा की दृष्टि से इनमें सर्वाधिक महत्त्व प्रातःकालीन सभा और साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्रियाओं का होता है। प्रायः सभी स्कूलों का शुभारम्भ प्रातःकालीन सभा से होता है। ईश प्रार्थना बच्चों को सद्मार्ग की ओर उन्मुख करती है। यदि शिक्षक

इसे महत्त्व देंगे और इस समय स्वयं अनुशासित रहेंगे और ईश्वर का ध्यान करेंगे तो बच्चों में यथा गुणों का विकास सहज में ही होगा। ईश प्रार्थना के बाद 10 मिनट प्रेरक प्रसंगों के लिए दिए जाने चाहिए। इन प्रेरक प्रसंगों में राम–शबरी, कृष्ण–सुदामा, महावीर और सर्प, बुद्ध और हंस, ईसामसीह और कुल्टा, मोहम्मद साहब और अजमत जैसे अनेक प्रेरक प्रसंग सुनाए जा सकते हैं। कभी–कभी दया, क्षमा, देश भक्ति ओर राष्ट्र समर्पण के प्रसंग भी सुनाने चाहिए। साहित्यिक कार्यक्रमों में भाषण, वाद–विवाद, कवि दरबार और कवि सम्मेलन आदि कार्यक्रम आते हैं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में संगीत गायन व वादन, लोकगीत, लोकनृत्य और नाटक आदि कार्यक्रम आते हैं। इन सभी कार्यक्रमों में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति परिलक्षित होती है। शिक्षकों को चाहिए कि इनके आयोजन का उत्तरदायित्व बच्चों पर छोड़ें, इनमें वे प्रेम, सहयोग और श्रम का सच्चा पाठ पढ़ेंगे। इन सब कार्यक्रमों की विषय–सामग्री आदर्शोन्मुखी होनी चाहिए एवं उनमें मानव मूल्यों की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। विद्यालयों में महापुरूषों के जन्मोत्सव इसलिए मनाए जाते हैं कि उनसे हम प्रेरणा लें। शिक्षकों को चाहिए कि इन उत्सवों पर महापुरूषों के जीवन पर प्रकाश डालें, उनके जीवन के प्रेरक प्रसंग सुनाएँ और आज के दिन बच्चों के साथ मिलकर कुछ जनहित में सोचें, कुछ समाज सेवा कार्य करें। ये वे क्षण होते हैं जब बच्चों में यह धारणा बनाई जा सकती है कि अच्छे काम करने वाले कभी मरते नहीं हैं, वे युग–युग तक याद किए जाते हैं। आज हमारे देश में तीन राष्ट्रीय उत्सव 15 अगस्त, 26 जनवरी और 2 अक्टूबर मनाये जाते है। शिक्षकों को इन अवसरों पर राष्ट्र के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति शब्दों में नहीं कार्यो में अभिव्यक्त करनी चाहिए, राष्ट्रहित के रचनात्मक कार्य करने चाहिए और बच्चों के साथ मिलकर करने चाहिए। उसी स्थिति में वे बच्चों में राष्ट्र के प्रति प्रेम उत्पन्न कर सकेंगे, उनमें राष्ट्र हित के आगे अपने हितों का त्याग करने की भावना विकसित कर सकेंगे। वैयष्टिक खेल–कूदों में आसन, व्यायाम और जिमनास्टिक आते हैं। सामूहिक खेलों में पी0टी0, हाकी, फुटबाल, कबड्डी और क्रिकेट आदि खेल आते हैं। खेल के मैदान पर खिलाड़ी अपने को खिलाडी समझता है, साहस और सहयोग के साथ खेलता है, खेल का आनन्द लेता है और हार–जीत दोनों को समान भाव से लेता है और इस प्रकार उसमें अनेक गुणों का विकास होता है। शिक्षक का कार्य है बच्चों में खेल भावना विकसित करना। यूँ तो आज विद्यालयों में अनेक प्रकार के सेवा संगठनों–स्काउटिंग, एन0एस0एस0 और एन0सी0सी0 सेवादल आदि की व्यवस्था होती है लेकिन अधिकतर विद्यालयों में कागजी खानापूर्ति अधिक की जाती है, सेवा कार्य कम किए जाते हैं। प्रधानाचार्य और शिक्षक बच्चों को तो सेवा कार्य में लगाते हैं पर स्वयं सेवा कार्य को हेय समझते हैं। शिक्षकों को चाहिए कि वे बच्चों के साथ स्वयं सेवा कार्य में जुटें, श्रमदान से सड़कें बनाएँ, पेड़ लगाएँ, रात्रि में प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर निःशुल्क सेवा करें और पास–पड़ोस के लोगों पर मुसीबत आने पर उनकी सहायता करें। तब बच्चे उनसे समाज सेवा का सच्चा पाठ पढ़ेंगे।

उपसंहार– वर्तमान में मनुष्य अत्यधिक स्वार्थी हो गया है। इसी कारण मूल्यों का ह्रास हो रहा है। मूल्यों के ह्रास के लिए काफी हद तक जिम्मेदार है हमारा समाज, एवं हमारी शिक्षा है, क्योंकि कोई भी मनुष्य जन्मजात खराब नहीं होता है, उसे वातावरण खराब बनाता है। जब बालक पैदा होता है तो वह सबसे प्रेम करता है। उसका हृदय पवित्र होता है। उसमें जाति–पाति का भेदभाव नहीं होता है। उसमें मानवीय मूल्य होते हैं। धीरे–धीरे जब वह बड़ा होता जाता है तो झूठ, स्वार्थ, लोभ, हिंसा, घृणा, उसमें पनपने लगते हैं, वह इसके वशीभूत हो जाता है। कल तक हम जिन मूल्यों को गिरा हुआ समझते थे, आज उन्हीं के पीछे भाग रहे हैं। कई असामाजिक तत्व हैं जो हमारी राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाते हैं, इसे नष्ट करते हैं। उपर्युक्त सभी मूल्य ऐसे हैं जो आधुनिक समाज में गिरते जा रहे हैं। सतयुग से कलयुग की ओर बढ़ते–बढ़ते हम देख रहे हैं कि प्राचीन मूल्यों में धीरे–धीरे कमी आ रही है। परिणामस्वरूप मूल्यों का ह्रास हो रहा है। मूल्यों को कायम रखने के लिए सर्वप्रथम तो शिक्षा नीति में सुधार अपेक्षित हैं, वर्तमान समय में गिरते हुए मूल्यों से समाज को बचाना है। वर्तमान समय के मूल्यों को ऊपर उठाने के लिए शिक्षा को ऊपर उठाना आवश्यक है। वर्तमान में छात्र ही भावी समाज के निर्माता है। अतः छात्रों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे उनमें मूल्यों का विकास हो तथा शाश्वत मूल्यों का संरक्षण हो। छात्रों को इसके लिए मूल्यपरक शिक्षा, देनी चाहिए। मूल्यों में गिरावट रोकने के लिए सर्वप्रथम छात्रों में गिरावट को रोकना, छात्रों में गिरावट का मुख्य कारण है शिक्षा में गिरावट। अतः शिक्षा में गिरावट को रोकना होगा।

हमारे सामने एक प्रश्न उठता है कि युग मूल्य 'आखिर बनें कैसे?' अर्थात् एक काल विशेष में एक समाज के अन्तर्गत वे कौन से कारक हैं जो मूल्यों को बनाने में सहायक हैं? इस प्रकार का उत्तर देने के लिए हमें व्यक्ति, समाज तथा शिक्षा तीनों की सम्पूर्ण गतिविधियों का अवलोकन करना होगा। छात्र वह बीज है जो

अपने अन्दर समस्त मूल्यों के विकास को समेटे हुए है। शिक्षा वह परिवेश है जो इस बीज को खाद–पानी देकर उसे विकसित होने का अवसर प्रदान करती है। इन दोनों के योगदान से ही मूल्यों का उद्‌भव होता है। शिक्षा समाज की वह सीढ़ी है जिस पर पाँव रखकर व्यक्ति अपने संस्कारों को सँवारता है। महान् व्यक्ति के जीवन का उदद्देय प्रायः समाज के सभी व्यक्तियों द्वारा समान रूप से स्वीकार किया जाता है। शिक्षा, समाज तथा व्यक्ति तीनों मिलकर यह निर्धारित करते हैं कि किन बातों पर ध्यान देने से अमुक काल में व्यक्ति तथा समाज का कल्याण सम्भव है। भारत में धर्मनिरपेक्षता का बहाना बनाकर मूल्य निरपेक्ष शिक्षा का नारा उछाला गया। अस्तु, देश में विघटनकारी तत्व आज पहले से कहीं अधिक हैं, युवा पीढ़ी विध्यंसात्मक कार्यों में जुटी दिखाई देती हैं समाज के मूल्य क्षण भंगूर हो गए हैं। शिक्षा प्रणाली मनुष्य में राग, द्वेष, हर्ष, शोक उत्पन्न कर रही है। ये ही मूल्यों का ह्रास होने का प्रमुख कारण है। भावना नहीं अपितु पदार्थ शिक्षार्थी में चिन्तन का विषय बन गया है। शिक्षा न तो मनुष्य में आत्मनियन्त्रण, न ही स्वाध्याय का विकास कर रही है। विद्यार्थी अपने कर्त्तव्यों से विमुख हो रहा है। शिक्षा यथार्थता तथा आदर्शों में भेद कर रही है। वर्तमान शिक्षा पद्धति और मूल्यों में कोई समन्वय नहीं है। भाषण, नोट्स तथा बने बनाये उत्तरों को दोहराने का कौशल ही शिक्षार्थी की परीक्षा की मापदण्ड है। ये गिरते हुए मूल्य हमारी शिक्षा के लिए एक चुनौती हैं। शिक्षा में सुधार के द्वारा ही इन्हें सुधारा जा सकता हैं। देश की इस भयंकर और चिन्तनीय स्थिति ने देश के शिक्षकों, शिक्षा विशेषज्ञों, शिक्षा आयोजकों और शिक्षा के कर्णधारों का ध्यान मानव मूल्यों की शिक्षा की आवश्यकता की ओर आकर्षित किया है। अब वे यह समझने लगे हैं कि शिक्षा में मूल्यों की स्थापना किये बिना पतन की ओर जाते समाज और राष्ट्र को रोका नहीं जा सकता। देश की सुरक्षा, शान्ति विकास और खुशहाली के लिए यही एक मात्र विकल्प है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. आर० ए० शर्मा (2011)। *शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक मूल आधार*। मेरठः आर० लाल बुक डिपो।
2. कपिल, एच०के० & सिंह, ममता (2013)। *सांख्यिकी के मूल तत्व*। आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
3. कौल, लोकेश (2012)। *शैक्षिक अनुसंधान की कार्य प्रणाली*। नोएडाः विकास पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड।
4. गेरैट, एच०ई० (2000)। *शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी के प्रयोग*। लुधियानाः कल्याणी पब्लिशर्स।
5. चतुर्वेदी, स्नेहलता (2016) *पाठयक्रम में भाषा*। आगराः अग्रवाल पब्लिकेशन्स।
6. पलोड़, सुनिता & लाल, आर०बी० (2008)। *शैक्षिक चिन्तन एवं प्रयोग* / मेरठः आर०लाल बुक डिपो।
7. पचौरी, जी0 (2009)। *शिक्षा के सामाजिक आधार*। मेरठः आर0 लाल बुक डिपो।
8. पाण्डेय, आर0 (2001)। *शैक्षिक निबन्ध*। आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
9. पाण्डेय, आर0 (2012) *हिन्दी शिक्षण*। आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
10. बैस्ट, जे० डब्ल्यू० (2011)। *रिसर्च इन एजुकेशन* । नई दिल्लीः पी०एच०आई० लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड।
11. राय, पी० & राय, सी० पी० (2012)। *अनुसंधान परिचय* । आगराः लक्ष्मी नारायण अग्रवाल।
12. सिंह, आर0 (1976) *संस्कृत भाषा विज्ञान*। आगराः विनोद पुस्तक मन्दिर।
13. Aggarwal, J. C. (1981). *Theory and principles of Education*. New Delhi: Vikas Publishing House PVT LTD.
14. Best, J. W., & Kahn, J. V. (2014). *Research in education.* Delhi: PHI Learning Private Limited.
15. Gupta, S. (2005). *Education in emerging India*. Delhi: Shipra publication.
16. Mohanty, J. (1986). *Indian education in the emerging society.* New Delhi: Sterling Publishers private limited.

17. Mukerji, S. N. (1958). *An introduction to Indian Education*. Baroda: Acharya book depot.
18. Nalwa, V. (1992). *The ABC of research for behavioural & social sciences*. New Delhi: Wiley Eastern Limited.
19. Patil, V. T., & Patil, B. C. (1982). *Problems in Indian Education.* New Delhi: Oxford & IBM Publishing CO.
20. Seetharamu, A.S. (1989). *Philosophies of Education.* New Delhi: Ashish Publishing House.
21. Singh, R.K. (2010). *Mechanics of research writing.* Bareilly: Prakash book depot.
22. Taneja, V. R. (1986). *Educational Thought and Practice.* New Delhi: Sterling Publishers Private Limited.

वेबसाइट
www.google.com
www.sodhganga.inflibnet.ac.in